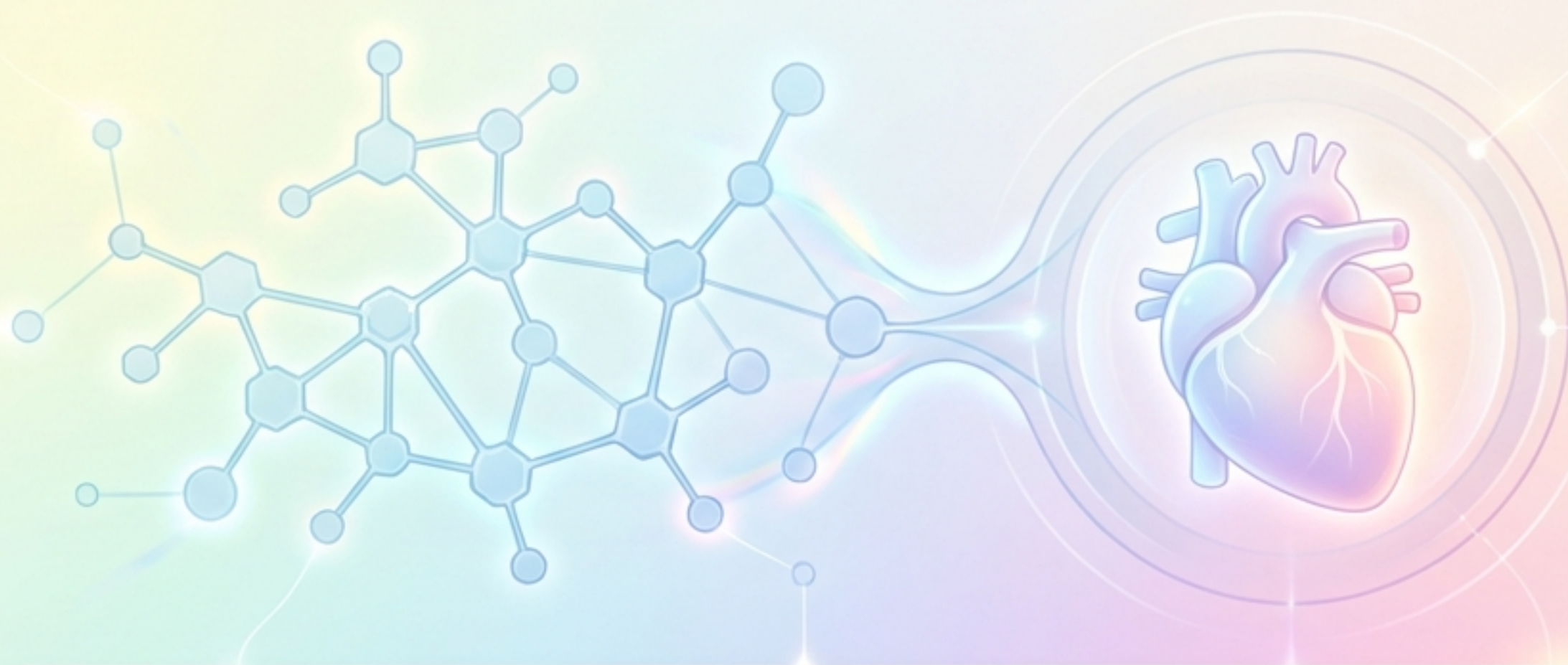


सतयुग की वापसी: समस्याओं की गहराई और समग्र समाधान

विज्ञान, सम्वेदना और २१वीं सदी के मानव का ब्लूप्रिंट (अध्याय ५-८)

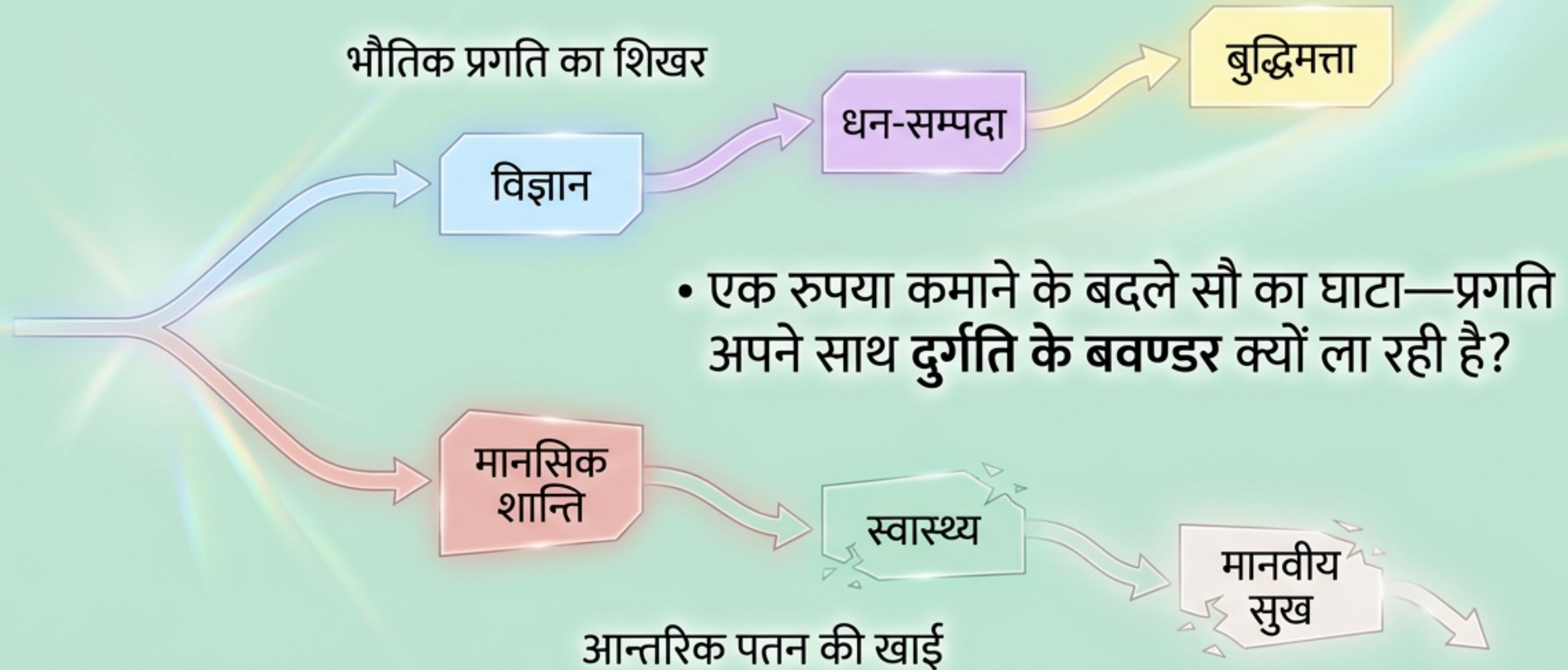


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे श्रद्धा साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अभूतपूर्व प्रगति के बीच अभूतपूर्व विपन्नता का विरोधाभास



अभावग्रस्तता का भ्रम और विपन्नता की वास्तविक जड़ें

सामाजिक भ्रम	यथार्थता
दरिद्रता का कारण धन का अभाव है।	वास्तविक दरिद्रता आत्म-नियंत्रण, पुरुषार्थ और सुनियोजन का अभाव है।
अशिक्षा का कारण पुस्तकों और विद्यालयों की कमी है।	वास्तविक अशिक्षा सीखने के उत्साह और उत्कण्ठा का अभाव है।

बाहरी अनुदान फूटे घड़े में पानी भरने के समान है, जब तक आन्तरिक संकल्प न जागे।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भाव-सम्वेदना शासक है और मस्तिष्क केवल उसका सेवक



मस्तिष्क आमतौर पर सभी का सही होता है, परन्तु जब अन्तःकरण में श्रद्धा और सम्वेदना का स्रोत सूख जाता है, तो बुद्धि विनाशकारी मार्ग अपना लेती है।

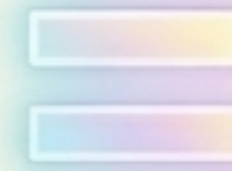
विनाश की वैज्ञानिक कार्यप्रणाली: जब साधन कुटिलता से मिलते हैं

दोष विज्ञान या बुद्धि का नहीं है, बल्कि उस मानसिकता का है जो इनका उपयोग कर रही है।

अभूतपूर्व
भौतिक सम्पदा
+
वैज्ञानिक कौशल



संकीर्ण स्वार्थपरता
+ निष्ठुरता



प्रदूषण, युद्धोन्माद,
शोषण, अपराध और
महाप्रलय का संकट

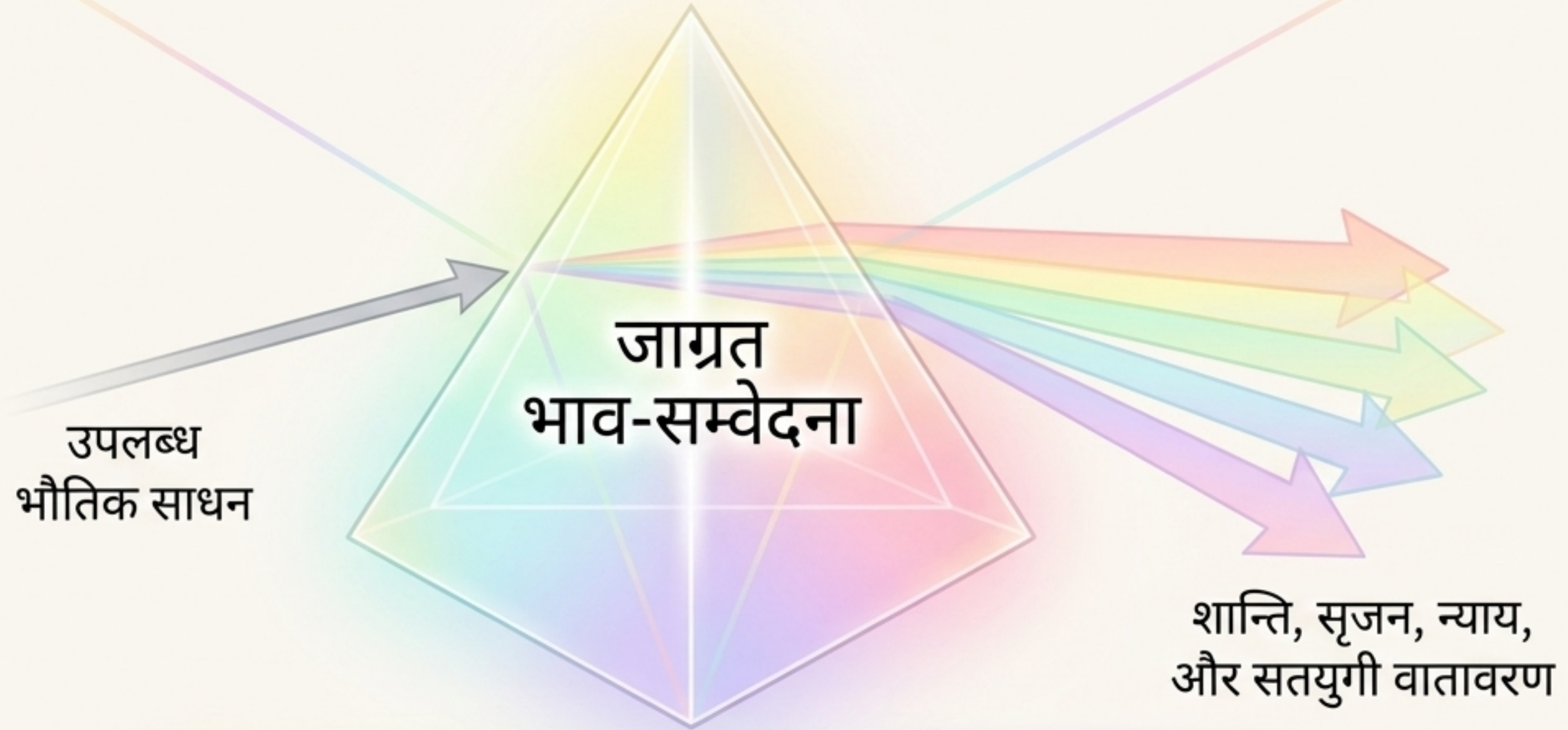
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

२१वीं सदी के अस्तित्व का एकमात्र एल्गोरीदमः भाव-सम्वेदना



समस्याओं के समाधान के लिए बस एक ही विकल्प शेष है।
इसके बिना, सभी बाहरी प्रयास विफल होंगे।

मनुष्य में देवत्व के अवतरण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया

देवत्व का अवतरण
साधारण मनुष्य का 'देवमानव' में रूपान्तरण।

लोकमंगल में समर्पण
बची हुई ऊर्जा को विश्व कल्याण में लगाना।

ऊर्जा की बचत
समय, श्रम और संसाधनों का संचय।

इन्द्रिय संयम
अपनी इच्छाओं और उपभोग पर अंकुश।



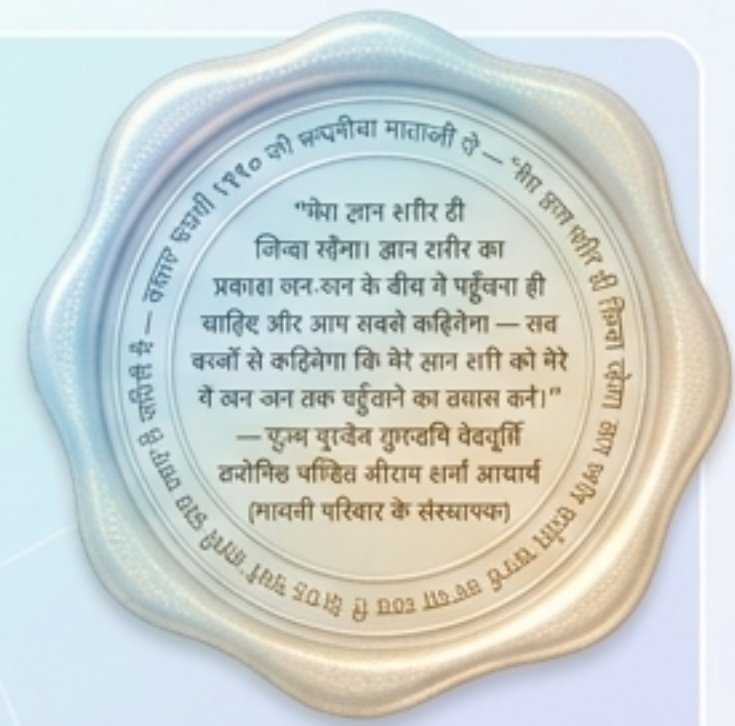
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

औसत मनुष्य और देवमानव की तुलनात्मक संरचना

औसत मनुष्य	देवमानव
लक्ष्य: संकीर्ण स्वार्थ और अनावश्यक संचय	लक्ष्य: लोकमंगल और परमार्थ
दृष्टिकोण: निष्ठुरता और दूसरों के प्रति उदासीनता	दृष्टिकोण: करुणा, उदारता और आत्मीयता
परिणाम: तनाव, असन्तोष और विनाश	परिणाम: आत्मसन्तोष, उत्कृष्ट व्यक्तित्व और स्वर्गोपम वातावरण

बाहरी साधन और भौतिक अनुदान क्यों विफल हो जाते हैं?



ब्रह्मांडीय नियम: मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है

Inner Mirror
व्यक्ति की आन्तरिक
चेतना और विचार

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम
शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Outer Reflection
समाज की बाहरी
परिस्थितियाँ

यदि परिस्थितियों की विपन्नता को सुधारना है, तो जनसमुदाय की मन:स्थिति
में दूरदर्शी विवेकशीलता और भाव-सम्वेदना को उगाना ही होगा।

समानुपातिक वितरण का प्राकृतिक चक्र

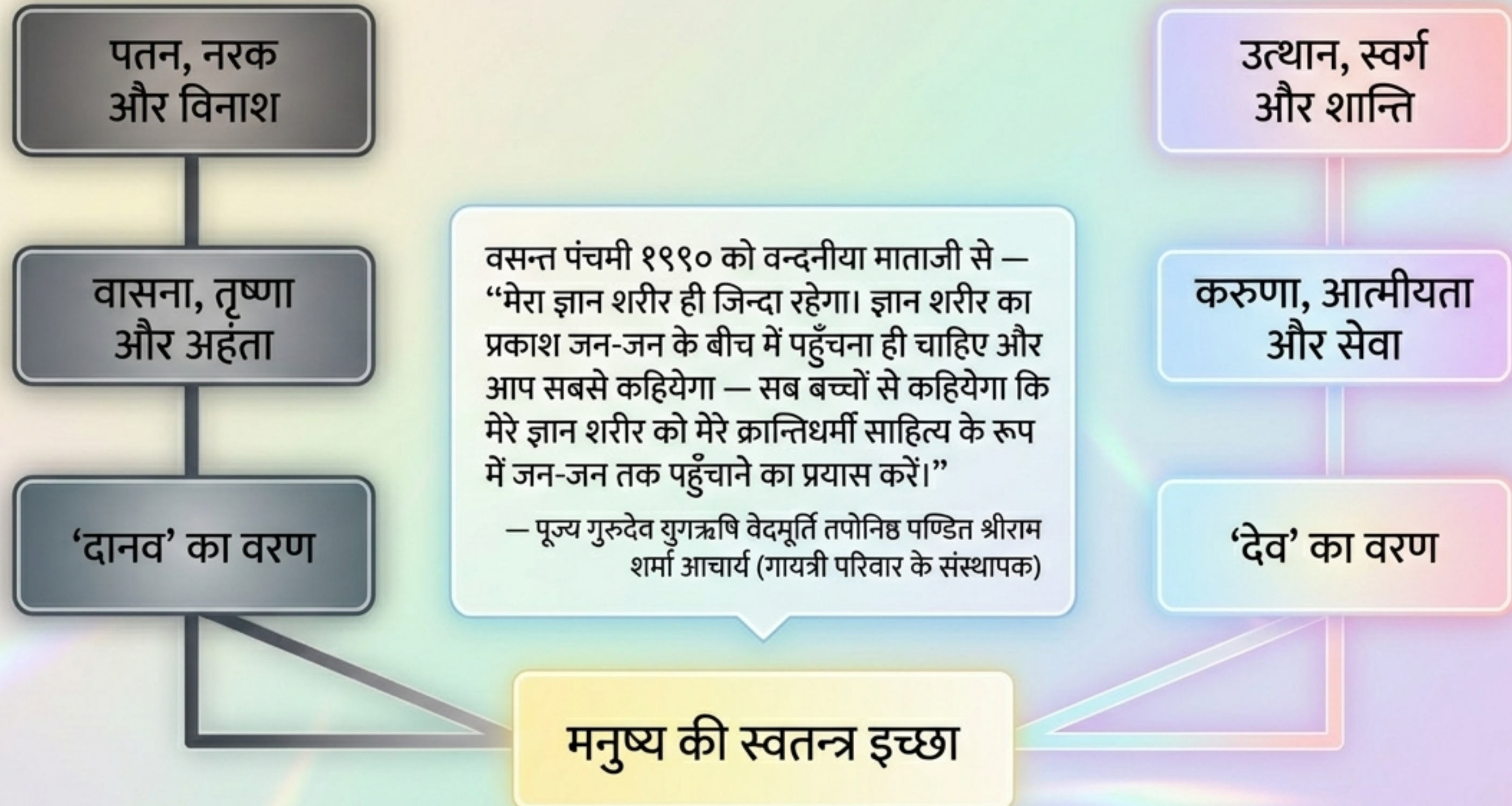
पुरुषार्थ द्वारा अर्जन

शेष सम्पदा का पिछड़े
हुओं के उत्थान में वितरण

औसत आवश्यकता
अनुसार उपभोग

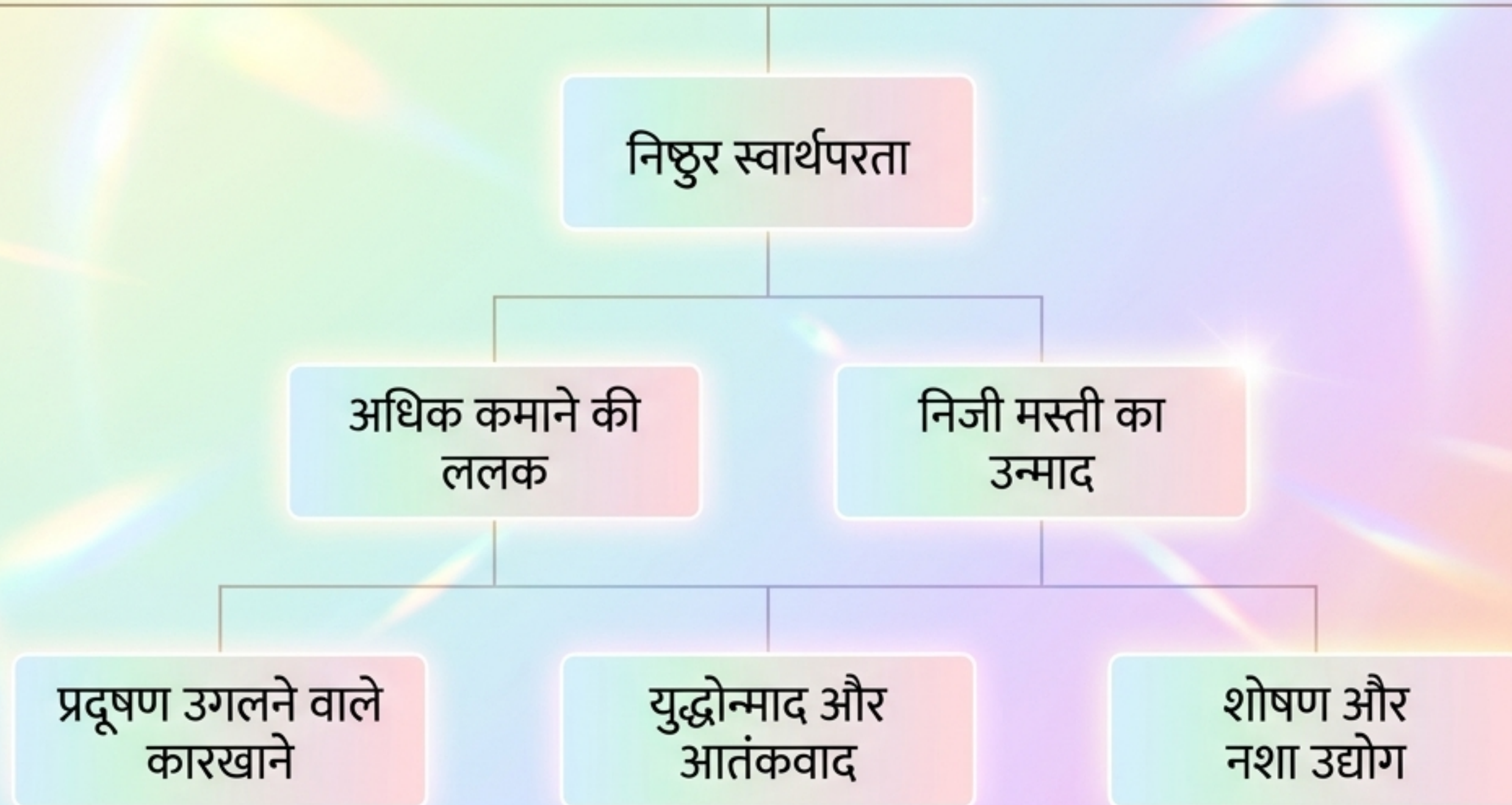
प्रकृति में कोई भी जीव अनावश्यक संग्रह नहीं करता। भाव-सम्वेदना
जाग्रत होते ही मनुष्य स्वतः इस प्राकृतिक नियम पर लौट आता है।

हम अपने भाग्य के निर्माता हैं: देव या दानव का वरण



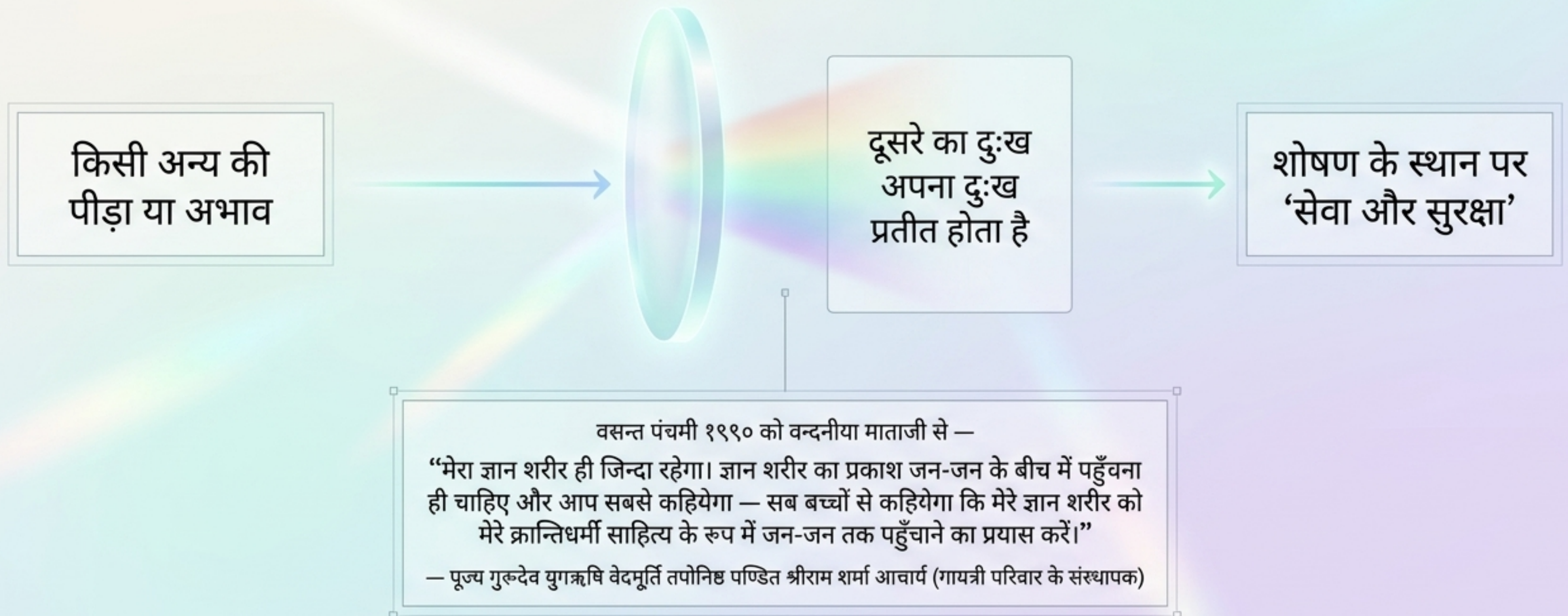
संकीर्ण स्वार्थपरता से उत्पन्न होने वाली वैश्विक शृंखला

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



करुणा का लेंस: दृष्टि बदलते ही सृष्टि बदलती है

‘करुणा और वात्सल्य’ का लेंस



२१वीं सदी का विश्व उद्यान और हमारी भूमिका



इक्कीसवीं सदी भाव-सम्बेदनाओं के जागरण की सदी है। इस विश्व उद्यान के निष्ठावान माली बनें।
सतयुग की वापसी इसी सामूहिक मानसिक परिवर्तन से सुनिश्चित है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)